गुरु नानक - सबद १०६

सिदकु सबूरी सादिका सबरु तोसा मलाइकाँ ॥

रागु सिरीरागु, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, ८३

सिदकु सबूरी सादिका सबरु तोसा मलाइकाँ ॥
दीदारु पूरे पाइसा थाउ नाही खाइका ॥२॥

सार: धैर्य और सत्यनिष्ठा आंतरिक शक्ति को विकसित करने में शक्तिशाली साथी हैं, जो हमारे कामों को निरंतरता और ईमानदारी की मज़बूत भूमि पर टिकाते हैं। जब परिणाम धीमे या अनिश्चित होते हैं तब दृढ़ता हमारे प्रयासों को बढ़ावा देती है, निराशा को दूर रखती है और हमारे उद्देश्य-बोध की भावना को बनाए रखती है। वहीं सत्यनिष्ठा यह सुनिश्चित करती है कि हमारी प्रगति हमारे मूल मूल्यों की कीमत पर न हो। दोनों मिलकर संकल्प और आचरण के बीच एक स्थिर आंतरिक सामंजस्य रचते हैं। चुनौतियाँ हमारे रास्ते से भटकने का कारण नहीं बल्कि हमारी प्रतिबद्धता को परखने के अवसर के रूप में काम करती हैं। जैसे-जैसे हम इन सिद्धांतों को अपनाते हैं, हमारा स्वयं पर गहरा विश्वास विकसित होता है और जो कुछ हम निर्मित करते हैं वह समर्पित प्रयास और स्पष्टता में निहित होकर स्थायी बनता है।

सिदकु सबूरी सादिका सबरु तोसा मलाइकाँ ॥
विश्वास और संतोष ही रास्ता है और धैर्य ही गुणी लोगों का सहारा है। यह बताता है कि दृढ़ता और ईमानदारी बाहरी संसाधनों के बजाय जागरूकता को कैसे पोषित करती है।

दीदारु पूरे पाइसा थाउ नाही खाइका ॥२॥
दृष्टि उन्हें मिलती है जो संपूर्णता को समझते हैं, घमंड के लिए कोई जगह नहीं है। इसका मतलब है कि अंतर्दृष्टि एकत्व की गहराई से आती है, न कि द्वैत के सतहीपन से। (२)

तत्त्व: गुरु नानक कहते हैं कि जीवन की मूल एकता को गहरी अंतर्दृष्टि के माध्यम से समझा जा सकता है जो हमारे अनुभवों को बदल देती है, हमारे जीवन के उद्देश्य को खोजने में हमारे अर्थ और प्रभावशीलता की भावना को गहरा करती है। वह इस बात पर ज़ोर देते हैं कि यह

आध्यात्मिक दृष्टि केवल उन्हीं लोगों को मिल सकती है जो आपस में जुड़े होने की जटिलता को पहचानते हैं और उसे अपनाते हैं। इस प्रबुद्ध दृष्टिकोण से यह स्पष्ट हो जाता है कि अहंकार या स्वार्थ के लिए कोई जगह नहीं है क्योंकि हम सभी एक बड़ी, सांझी वास्तविकता का हिस्सा हैं।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com